पंजीकरण फार्म

द्विदिवसीय राष्ट्रिय संगोष्ठी
पाणिनीय व्याकरण एवं संगणक भाषाविज्ञान
दशा एवं दिशा
18–19 जुलाई 2016

नाम:_____
_____
पदनाम:_____
_____
विश्वविद्यालय / संस्थान / कालेज:_____
_____
_____
_____
पूर्ण पत्र व्यवहार पता:
_____
_____
ई.मेल:_____
फोन / मोबाइल न0:
_____
शोध पत्र शीर्षक
_____
_____
_____
लेखक:_____
उप–लेखक:
_____
_____
पंजीकरण शुल्क विवरण:
शुल्क:_____
दिनांक:____/____/20

प्रतिभागी हस्ताक्षर

प्रधान संरक्षक
श्री जगदीश नारायण मिश्र
कुलाधिपति
संरक्षक
प्रो0 कृष्ण बिहारी पाण्डेय
कुलपति
प्रो0 सुरेशचन्द्र तिवारी
प्रतिकुलपति

संयोजिका
डॉ0 सविता ओझा
समन्वयक, संस्कृत विभाग, मो0नं0–
9453228728
savitakashyapojha@gmail.com
सहसंयोजक
डॉ0 देवनारायण पाठक,
सह समन्वयक, संस्कृत विभाग,
मो0नं0–7607974120
डॉ0 मेघना श्रीवास्तव मो0नं0– 9453929929

परामर्श मण्डल
डॉ0 छाया मालवीय
अधिष्ठाता कला संकाय
डॉ0 ममता मिश्रा
समन्वयक, हिन्दी विभाग,
डॉ0 प्रबुद्ध मिश्र
समन्वयक, दर्शन विभाग।

महत्वपूर्ण तिथियां
सारांष भेजने की तिथि : ***8 जुलाई, 2016***
पूर्ण शोध पत्र भेजने की तिथि : ***12 जुलाई, 2016***
पंजीकरण प्रपत्र जमा करने की अंतिम तिथि: 12 जुलाई 2016

द्विदिवसीय राष्ट्रिय संगोष्ठी

पाणिनीय व्याकरण एवं संगणक भाषाविज्ञान
दशा एवं दिशा

National Seminar
On
Paninian Grammer & Computational
Lingustics: Present & Future Scenario
18-19 July 2016

आयोजक

संस्कृत विभाग,
नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान गंगानाथझा परिसर एवं
गंगानाथझा पीठ, के सहयोग से।

सेमिनार के सम्बन्ध में:-

पाणिनीय व्याकरण एवं संगणक भाषाविज्ञान
दशा एवं दिशा

वर्तमान युग सूचना प्रौद्योगिकी का युग है। आज विश्व के श्रेष्ठ संगणकवैज्ञानिकों द्वारा पाणिनि को सूचना प्रौद्योगिकी का आदि पुरुष स्वीकार किया जाता है। अमेरिका के 'नासा' नामक अनुसंधान केन्द्र के वैज्ञानिक रिक् ब्रिक्स ने भारतीय वैयाकरणों के भाषाविश्लेषण सम्बन्धी सिद्धान्तों को संगणकभाषाविज्ञान के लिए सर्वाधिक उपयुक्त घोषित किया है। रिक ब्रिक्स के उक्त सन्दर्भ में शोधपत्र प्रकाशित होने के बाद से इस दिशा में कुछ महत्त्वपूर्ण प्रयत्न हो रहे हैं, जिनमें भारतीय एवं अन्य भाषाओं के लिए पाणिनीय व्याकरण पर आधारित यान्त्रिक अनुवाद पद्धति विकसित करने के प्रयत्न उल्लेखनीय हैं। इसके साथ ही संस्कृत भाषा के लिए भी विश्व के विभिन्न अनुसन्धानरत विद्वानों के द्वारा महत्त्वपूर्ण कार्य किए गए हैं।

आज इस दिशा में समन्वित प्रयत्न से इन कार्यों को द्रुत गति से संवर्धित करने की आवश्यकता है। संस्कृतविद्या के क्षेत्र में अध्ययन तथां अनुसन्धानरत विद्वानों एवं संगणक विद्या में अनुसन्धानरत विद्वानों के संयुक्त प्रयत्न से ही भारतीय ऋषियों के द्वारा आविष्कृत भाषाविश्लेषण के सिद्धान्तों का उपयोग कर प्राचीन भारतीय मेधा की आज के विश्व के लिए प्रायोगिक उपयोगिता सिद्ध की जा सकती है।

उपर्युक्त तथ्य के आलोक में कुछ महत्त्वपूर्ण कदम उठाना समय की माँग है, जिनमें संगणभाषाविज्ञान के क्षेत्र में पाणिनीय व्याकरण की भाषाविश्लेषण प्रविधि का उपयोग कर भारतीय भाषाओं के परस्पर अनुवाद के लिए विकसित किए जा रहे नियमाधारित अनुवाद पद्धति की गुणवत्ता को निरन्तर सवंर्धित करना, भारतीय भाषाओं से अंग्रेजी के लिए पाणिनीय सिद्धान्तों पर आधारित यान्त्रिक अनुवाद पद्धति को निरन्तर विकसित करने के लिए सामूहिक प्रयत्न करना, भाषाक्षेत्र से सम्बद्ध विद्वानों को इस दिशा में समन्वित प्रयत्न के लिए संगठित करना तथा संगोष्ठी कार्यशालाओं शोधकार्यों एवं शोधपत्रों के माध्यम से उक्त के सम्बन्ध में विविध सिद्धान्तों पर सामूहिक विचार विमर्श करना आदि प्रमुख हैं।

संस्कृत विभाग, नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, गंगानाथझा पीठ एवं राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान गंगानाथझा परिसर के व्याकरण विभाग के शैक्षिकपरामर्शीय सहयोग से इस दिशा में महत्त्वपूर्ण रूप में *पाणिनीयव्याकरण एवं संगणक भाषाविज्ञान दशा एवं दिशा* विषय पर दिनांक 18/7/2016 से दिनांक 19/7/2016 पर्यन्त एक राष्ट्रिय संगोष्ठी का आयोजन कर रहा है।

संगोष्ठी में प्रतिभागिता हेतु निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं तथा सम्बद्ध बिन्दुओं पर शोध पत्र आमन्त्रित हैं–

1. कृत्रिम मेधा एवं पाणिनीय व्याकरण
2. मशीन ट्रांसलेशन एवं पाणिनीय व्याकरण के भाषा विश्लेषण के सिद्धान्त
3. अनुसारक (भारतीय भाषाओं के लिए) वर्तमान स्थिति एवं अग्रिम करणीय कार्य
4. अनुसारक (अंग्रेजी से हिन्दी) वर्तमान स्थिति एवं अग्रिम करणीय कार्य
5. सांख्यिकीय मशीनी अनुवाद सिद्धान्त एवं नियमाधारित मशीनी अनुवाद सिद्धान्त : कार्यप्रणाली एवं सम्भावनाएं
6. भारतीय भाषाओं के लिए संगणकीय कोष निर्माण
7. अंग्रेजी से भारतीय भाषाओं एवं भारतीय भाषाओं से अंग्रेजी के लिए संगणकीय कोष निर्माण
8. संस्कृत के लिए उपलब्ध सॉफ्टवेयर वर्तमान स्थिति एवं अग्रिम योजनाएं
9. संस्कृत एवं अन्य भाषाओं में अनुवाद हेतु कार्यों की वर्तमान स्थिति एवं भावी योजनाएँ
10. वैश्विक स्तर पर संस्कृत संगणक भाषाविज्ञान तथा पाणिनीय पद्धति पर आधारित मशीनी अनुवाद हेतु किये जा रहे प्रयत्नों के सम्वर्धन के उपाय।

प्रतिभागियों/शोध छात्रों से अनुरोध है कि वे मुख्य/उपविषयों से सम्बन्धित अपने आलेख की सारांशिका, दिनांक 08.07.2016 तक ईमेल– savitakashyapojha@gmail.com पर भेज दें तथा आलेख की प्रति, संगोष्ठी की तिथि तक अवश्य उपलब्ध करा दें। सारांशिका/शोधालेख हिन्दी krutidev10 (14 font) अथवा Times New Roman (12 font) में दें। सारांशिका/शोधालेख में शीर्षक, लेखक का नाम, ईमेल, मोबाइल नं0, संकाय एवं विभाग के नाम का स्पष्ट उल्लेख अवश्य करें। गुणवत्तापूर्ण, चयनित शोध पत्रों का विश्वविद्यालय से प्रकाशित ISSN No. युक्त शोध पत्रिका मे प्रकाशन संभावित होगा।

पंजीकरण शुल्क

शिक्षाविद्/शोध छात्र	:	600/– रू0
विद्यार्थी	:	250/– रू0

पंजीकरण प्रपत्र इस आमंत्रण पत्र के साथ संलग्न है। प्रतिभागियों से अनुरोध है कि फोटो सहित पंजीकरण हेतु भरे प्रपत्र को, पंजीकरण शुल्क के साथ संस्कृत विभाग, नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्याालय में समय से जमा करा सकते हैं।

आयोजन स्थल
शोध केन्द्र, झूठी ताली
नेहरु ग्राम भारती विश्वविद्यालय , इलाहाबाद।

विश्वविद्यालय के बारें में:

त्रिवेणी की पावन नगरी प्रयाग में दुर्वासा की तपोभूमि में स्थित नेहरु ग्राम भारती विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश के प्रथम ग्रामीण विश्वविद्यालय के रूप में प्रतिष्ठित है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा मान्यता प्राप्त इस डिम्ड विश्वविद्यालय का उद्देश्य सुदूर गाँव में बसे विद्यार्थियों, जो आधुनिक तकनीकी सुविधाओं से वंचित हैं, को उच्च से उच्चतर शिक्षा प्रदान करना तथा सूचना एवं संचार के आधुनिकतम संसाधनों में निष्णात करते हुए उन्हें बेहतर रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना है। साथ ही साथ उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करते हुए उन्हें स्वावलम्बी बनाना है। वर्तमान भारत में गाँव का पलायन बड़ी तीव्रता से शहर की ओर हो रहा है जिसका असर भारत की आत्मा पर दिखायी पड़ रहा है। इस समय की महती आवश्यकता है कि गाँव विकसित होते हुए गाँव में ही रहे। इसी को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय की आधारशिला रखने वाले सामाजिक चिंतक श्री जगदीश नारायण मिश्र जी के संरक्षण में यहाँ कला, विज्ञान, वाणिज्य, प्रबन्धन, तकनीकी, कम्प्यूटर अप्लिकेशन, सामान्य एवं विशिष्ट शिक्षक शिक्षा, पत्रकारिता, पुस्तकालय विज्ञान तथा अन्य पारम्परिक विषयों में स्नातक से शोध तक के विभिन्न पाठ्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है।

इलाहाबाद के बारे में:

इलाहाबाद विश्व का एक महत्वपूर्ण अध्यात्मिक एवं धार्मिक नगर है, जिसे प्रयागराज या तीर्थराज के नाम से भी जाना जाता है। यह प्राचीन काल से ही ज्ञान का केन्द्र रहा है, यहाँ गंगा, जमुना एवं अदृश्य सरस्वती का संगम है जहाँ प्रत्येक 12 वर्ष बाद विश्व के सबसे बड़े मेले कुंभ का आयोजन होता है। स्वतंत्रता संग्राम प्रभावी भूमिका निभाने वाला शहर इलाहाबाद भारत का साहित्य एवं राजनीति का भी केन्द्र रहा है, जिसने देश को अनेक साहित्यकार एवं राजनेता दिए हैं। अपनी बसावट एवं अद्भुत वातावरण के कारण इसकी गणना देश के महत्वपूर्ण शहरों में होती है। साहित्यकार धर्मवीर भारती के शब्दों में *'इस शहर की बनावट, गठन, जिंदगी और रहन–सहन में कोई बधें–बधायें नियम नहीं, कहीं कोई कसाव नहीं, हर जगह एक स्वच्छंद खुलाव, एक बिखरी हुई सी अनियमितता। मौसम में कोई सम नहीं, कोई संतुलन नहीं। सुबह मलय सी, दोपहर अंगारे तो शामे रेशमी.....सचमुच लगता है कि प्रयाग का नगर–देवता स्वर्ग–कुंजो, से निर्वासित कोई मन मौजी कलाकार है, जिसके सृजन में हर रंग के डोरे हैं।''*